प्रेस विज्ञप्ति

पूसा कृषि विज्ञान मेला: दूसरा दिन

पूसा कृषि विज्ञान मेले के दूसरे दिन, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी ने मेले का दौरा किया। उन्होंने प्रदर्शन स्टाल का दौरा किया और किसानों एवं वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। पूसा कृषि विज्ञान मेला हर वर्ष किसानों के लिए कृषि में नवीनतम तकनीकों और विकास के प्रत्यक्ष प्रदर्शन के लिए मंच प्रदान करता है। किसान मेले के दूसरे दिन में "किसानों की आय बढ़ाने के लिए माध्यमिक कृषि में नवाचार" विषय पर तकनीकी सत्र आयोजित किया गया। सत्र की अध्यक्षता डॉ. एच. एस. गुप्ता, पूर्व महानिदेशक, बीसा और पूर्व निदेशक, भा.कृ.अ.स. ने की । इस सत्र में अन्य गणमान्य व्यक्ति डॉ. ए के सिंह, उपमहानिदेशक, कृषि विस्तार और निदेशक, भा.कृ.अ.स.; डॉ. जयकृष्ण जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्य) और (पशु विज्ञान); डॉ. जे पी शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार) भी उपस्थित रहे । शुरुआत में, सभापति ने सभी पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किसानों को बधाई दी और साथ ही कृषि क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने उनसे अपने अनुभव सभी के साथ साझा करने और मेले में मौजूद किसानों को प्रेरित करने का अनुरोध किया। संयुक्त निदेशक (प्रसार) डॉ. जे.पी. शर्मा ने कृषि क्षेत्र में मूल्य संवर्धन के उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि छोटे छोटे नवाचार किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य दिलाने और कम समय में वांछित आय प्राप्त करने में प्रसंस्करण मदद कर सकती है ।

पद्मश्री श्री कंवल सिंह चौहान ने 1957 से अब तक बेबी कॉर्न उत्पादन के क्षेत्र में अपनी यात्रा के बारे में अपना अनुभव साझा किया। बाद में उन्होंने मशरूम, शिमला मिर्च और टमाटर की खेती भी शुरू की और सफलता प्राप्त की। उन्होंने हरियाणा राज्य सरकार की फसल क्लस्टर विकास योजना से होने वाले लाभों के बारे में उल्लेख किया, जिसके कारण उन्हें सफलता मिली। आज वह प्रतिदिन 8 टन बेबी कॉर्न को इंग्लैंड को निर्यात करते हैं । उन्होंने वैज्ञानिक समुदाय से अनुरोध किया की किसानो को रासायनिक कीटनाशकों के कम उपयोग करने के लिए प्रेरित करें । हरियाणा के करनाल के पदम श्री सुल्तान सिंह जी ने मछली पालन में अपना अनुभव साझा किया। उन्होंने महज 500 रुपये के निवेश से शुरुआत की और करोड़पति बन गए। मछली उत्पादन के साथ-साथ उन्होंने प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में कैटफ़िश और रियर झींगा का प्रजनन भी शुरू किया। उन्होंने उत्पादकता बढ़ाने के लिए पुनरावर्ती जल-संस्कृति प्रणाली भी

विकसित की है । वह भविष्य में अपने मछली उत्पाद " फिश बाइट " द्वारा के.एफ.सी. चिकन को टक्कर देने की इच्छा रखते हैं। श्री भारत भूषण त्यागी को जैविक खेती में नवाचारों के लिए "पद्म श्री" से सम्मानित किया गया है। उन्होंने किसानों को जैविक खेती करने के लिए प्रेरित किया और आश्वासन दिया कि इससे आमदनी में अधिक लाभ मिलेगा।

पद्म श्री श्री राम शरण वर्मा जी उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के दौलतपुर गाँव से हैं। उन्होंने 1986 में केले की खेती के साथ अपनी यात्रा शुरू की और बाद में उन्होंने उत्तर प्रदेश के पुराने चावल-गेहूं-गन्ना बेल्ट में कई नई फसलों जैसे आलू, टमाटर, पुदीना की शुरुआत की। उन्होंने अपनी खुद की हाइब्रिड और ऊतक संवर्धन तकनीक भी विकसित की और दौलतपुर गाँव में "हाई-टेक कृषि और परामर्श" सेवाएँ संचालित कीं। डॉ. एस के झा, (प्रोफेसर, खाद्य विज्ञानं एवं फसलोत्तर प्रोद्योगिकी संभाग) ने किसानों को कृषि और बागवानी फसलों के प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन के लाभ के बारे में बताया। प्रसंस्करण प्राथमिक कृषि वस्तुओं के मूल्य को बढ़ाता है और किसानों को बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव से बचाता है, जिससे आय में वृद्धि होती है। डॉ. नीलम पटेल, I / C, CPCT ने संरक्षित खेती प्रौद्योगिकियों के विभिन्न तरीकों पर प्रकाश डाला और कैसे परी नगरीय क्षेत्रों में किसानों को इस तरह की तकनीकों को अपनाकर लाभ मिल सकता है। डॉ. डी. के. यादव, ए.डी.जी. (सीड्स) और विभागाध्यक्ष , एस.एस.टी. ने छोटे पैमाने पर लाभदायक बीज उत्पादन उद्यम और बीज उत्पादन प्रौद्योगिकियों को लेने के लाभ पर चर्चा की। सस्य विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. वी. के. सिंह ने कृषी मेले में 1 हेक्टेयर और 1 एकड़ एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल पर प्रकाश डाला। उन्होंने 86% छोटे किसानों के लिए इसके महत्व पर बल दिया क्योंकि इसमें कृषि आय के साथ पोषण सुरक्षा प्रदान करने की क्षमता है। डॉ.वाई. वी. सिंह ने कृषि के जैव उर्वरक और जैविक कृषि तकनीकों के बारे में चर्चा